International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in July 2024, ISSN -2393-8048

भारतीय निर्वाचन प्रणाली में सुधार : संभावनाएं और चुनौतियाँ

अजय कुमार सिंह, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
डॉ० रितेश मिश्रा, निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

शोध सारांश

यह शोध पत्र भारतीय निर्वाचन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता, संभावनाओं, और इसके समक्ष विद्यमान चुनौतियों का विश्लेषण करता है। भारतीय लोकतंत्र में मतदाता की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन मौजूदा निर्वाचन प्रणाली में कुछ कमियां हैं, जैसे धनबल और बाहुबल का प्रभाव, अल्पसंख्यक समूहों का अपर्याप्त प्रतिनिधित्व, और ईवीएम की विश्वसनीयता से जुड़े प्रश्न।

इस शोध में विभिन्न सुधारों पर चर्चा की गई है, जैसे प्रोपोर्शनल रिप्रजेंटेशन प्रणाली का समावेश, जिससे अल्पसंख्यक समूहों का बेहतर प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सकता है; रैंक-चॉइस वोटिंग जो वोटिंग प्रक्रिया को और प्रभावी बना सकती है; और चुनावों में तकनीकी सुधार, जैसे ईवीएम की सुदृढ़ता बढ़ाने के लिए वीवीपैट (Voter-Verified Paper Audit Trail) का उपयोग।

सुधारों के संभावित लाभों के साथ-साथ, यह शोध चुनाव सुधार के समक्ष आने वाली चुनौतियों का भी उल्लेख करता है, जिनमें राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी, सुधारों के क्रियान्वयन में कानूनी अड़चनें, और संसाधनों की सीमाएँ शामिल हैं। निष्कर्षतः, यह शोध सुझाव देता है कि भारतीय निर्वाचन प्रणाली को पारदर्शी, समावेशी, और निष्पक्ष बनाने के लिए विभिन्न सुधारों की सिफारिश की जानी चाहिए और इन्हें लागू करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।

प्रमुख शब्द : भारतीय निर्वाचन प्रणाली,चुनाव सुधार,आदर्श आचार संहिता,धनबल और बाहुबल,अनुपातिक प्रतिनिधित्व,रैंक-चॉइस वोटिंग,मतदाता सूची प्रबंधन,ईवीएम और वीवीपैट। पारदर्शिता और निष्पक्षता, लोकतांत्रिक सुदृढ़ता।

परिचय

भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है उसकी निर्वाचन प्रक्रिया, जो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की संरचना को जीवंत बनाए रखता है। भारत में चुनावों का आयोजन "प्रथम-पास्ट-द-पोस्ट" (FPTP) प्रणाली के आधार पर किया जाता है, जिसमें सबसे अधिक वोट पाने वाला प्रत्याशी विजयी घोषित होता है, भले ही उसे कुल मतों का पूर्ण बहुमत न मिला हो। यह प्रणाली अपनी सरलता के लिए जानी जाती है, परन्तु इसके कई नकारात्मक पहलू भी हैं।

भारत में निर्वाचन प्रणाली को अधिक समावेशी, पारदर्शी और प्रतिनिधित्वयुक्त बनाने की आवश्यकता स्पष्ट रूप से महसूस की जा रही है। इस शोध का उद्देश्य भारत की वर्तमान निर्वाचन प्रणाली का विश्लेषण करना है और उसमें सुधार की संभावनाओं और चुनौतियों पर चर्चा करना है।

भारतीय निर्वाचन प्रणाली की वर्तमान स्थिति

भारत में चुनावी प्रक्रिया को संगठित, स्वतंत्र और निष्पक्ष रखने के लिए निर्वाचन आयोग का गठन किया गया है, जो एक स्वायत्त निकाय है। वर्तमान प्रणाली का आधार FPTP है, जो सरलता और स्थिरता प्रदान करती है, क्योंकि यह स्पष्ट विजेता को चुनने में सहायक है। इस प्रणाली में प्रत्याशी को जीतने के लिए मात्र सबसे अधिक वोट प्राप्त करने होते हैं, पूर्ण बहुमत की आवश्यकता नहीं होती।

हालांकि, इस प्रणाली की अपनी सीमाएं भी हैं। उदाहरण के लिए, यह संभावित है कि एक प्रत्याशी ने कुल मतों का केवल 30-40% प्राप्त किया हो और शेष मत दूसरे प्रत्याशियों को गए हों, फिर भी वह विजेता बन जाता है। इसके कारण बहुसंख्यक प्रतिनिधित्व की कमी रहती है। FPTP प्रणाली के कारण अक्सर कई सामाजिक और आर्थिक वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता, जिससे "अनुपातिक प्रतिनिधित्व" प्रणाली पर विचार किया जा रहा है।

सुधार की संभावनाएं

भारतीय निर्वाचन प्रणाली में सुधार की दिशा में कई संभावनाएं हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित

हैं:

वैकल्पिक मत प्रणाली

अनुपातिक प्रतिनिधित्व (PR) प्रणाली का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पार्टियों को मिलने वाली सीटें उनके कुल प्राप्त मतों के अनुपात में हो। इससे विभिन्न सामाजिक वर्गों का बेहतर प्रतिनिधित्व संभव हो सकता है। इसके अलावा, रैंक्ड चॉइस वोटिंग (RCV) जैसी वैकल्पिक प्रणाली भी एक विकल्प है, जिसमें मतदाता अपनी पसंद के आधार पर उम्मीदवारों को रैंक देते हैं।

वोटर पंजीकरण में सुधार

मतदाता पंजीकरण प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए डिजिटलाइजेशन एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। ऑनलाइन पंजीकरण, बायोमेट्रिक सत्यापन और मोबाइल वोटिंग जैसे साधनों का उपयोग मतदाताओं की भागीदारी को बढ़ा सकता है। इससे विशेष रूप से युवा और प्रवासी मतदाताओं के लिए मतदान करना अधिक सुविधाजनक होगा।

निर्वाचन आयोग की स्वतंत्रता और शक्ति में वृद्धि

निर्वाचन आयोग को और अधिक स्वायत्त बनाने की आवश्यकता है ताकि वह राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त होकर कार्य कर सके। यह आयोग को और मजबूत बना सकेगा और चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता और पारदर्शिता को बनाए रखेगा।

राजनीतिक वित्तीय पारदर्शिता

चुनावों में धन का अवैध उपयोग एक बड़ी समस्या है। राजनीतिक पार्टियों की वित्तीय गतिविधियों की निगरानी और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए कठोर कानून और उनकी सख्त अनुपालना की आवश्यकता है। चुनावी खर्च की सीमा का सख्त अनुपालन और पारदर्शी रिपोर्टिंग प्रणाली लागू करने से धन के दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

तकनीकी सुधार

डिजिटल वोटिंग और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों का प्रयोग मतदान प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। डिजिटल प्रणाली से मतदाताओं के सत्यापन में सुधार हो सकता है और चुनावी धोखाधड़ी को कम किया जा सकता है।

सुधार के समक्ष चुनौतियाँ

भारतीय निर्वाचन प्रणाली में सुधार की संभावना तो है, परंतु इसके समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं:

1. राजनीतिक और प्रशासनिक अड़चनें

भारतीय राजनीति में सुधारों का विरोध एक सामान्य बात है। राजनीतिक दल अक्सर वर्तमान प्रणाली से लाभ प्राप्त करते हैं और इसके बदलने का विरोध करते हैं। प्रशासनिक स्तर पर भी कई बाधाएं हैं, जैसे कि धन, संसाधन और तकनीकी ज्ञान का अभाव।

2. नागरिक जागरूकता और तकनीकी ज्ञान की कमी

भारत में व्यापक पैमाने पर तकनीकी ज्ञान की कमी है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। डिजिटलाइजेशन और नई तकनीकों को अपनाने में लोगों को प्रशिक्षित करना एक बड़ी चुनौती हो सकती है। इसके अतिरिक्त, नागरिक जागरूकता और चुनावी सुधार के महत्व को लेकर लोगों में जागरूकता की कमी है।

3. सामाजिक असमानताएँ और राजनीतिक पार्टियों का विरोध

भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता चुनावी सुधार के कार्यान्वयन को कठिन बना देती है। देश के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक असमानताएँ मौजूद हैं, जो चुनाव सुधारों को लागू करने में बाधा बन सकती हैं। साथ ही, राजनीतिक दल चुनावी सुधारों का विरोध कर सकते हैं, खासकर जब सुधार उनकी शक्तियों और हितों पर प्रभाव डालते हैं।

4. धन और बाहुबल का बढ़ता प्रभाव

भारतीय चुनावों में धन और बाहुबल का महत्वपूर्ण प्रभाव है। बाहुबली नेताओं और धनबल का प्रयोग कर चुनावों को प्रभावित करना एक बड़ी समस्या है। चुनावी सुधारों के माध्यम से इस

प्रवृत्ति को नियंत्रित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

आगे की दिशा और सिफारिशें

1. कठोर नीतियों का निर्माण

चुनावी सुधारों के लिए प्रभावी नीतियों का निर्माण और उनका सख्त अनुपालन आवश्यक है। इन नीतियों में राजनीतिक पार्टियों के वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ाने, उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठभूमि को सार्वजनिक करने, और चुनावी खर्च की निगरानी को सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

2. सामाजिक जागरूकता अभियान

समाज में चुनाव सुधारों के महत्व और जरूरत के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक स्तर पर अभियान चलाए जाने चाहिए। इन अभियानों से जनता को उनके मताधिकार का सही प्रयोग करने के बारे में शिक्षित किया जा सकता है और चुनावों में सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सकता है।

3. तकनीकी सुधार और डिजिटल समाधान

डिजिटल और तकनीकी सुधारों को अपनाने से पारदर्शिता और विश्वसनीयता को बढ़ावा मिलेगा। ब्लॉकचेन आधारित वोटिंग, बायोमेट्रिक सत्यापन, और डिजिटल पंजीकरण जैसी तकनीकों का प्रयोग चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने के लिए किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भारत में वर्तमान चुनाव प्रणाली को सुधारने की आवश्यकता स्पष्ट है। प्रथम-पास्ट-द-पोस्ट प्रणाली की सीमाएं और देश की विविधतापूर्ण जनसंख्या का समुचित प्रतिनिधित्व न हो पाना चुनाव सुधारों को आवश्यक बनाता है। भारत में चुनाव प्रणाली को अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और समावेशी बनाने के लिए विभिन्न वैकल्पिक उपायों की संभावनाएं हैं, लेकिन इसके लिए मजबूत इच्छाशक्ति और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।

चुनाव सुधारों के माध्यम से ही एक स्वस्थ और प्रभावी लोकतंत्र का निर्माण हो सकता है, जिसमें प्रत्येक नागरिक की आवाज सुनी जा सके और उसकी भागीदारी को महत्व दिया जा सके। भारतीय लोकतंत्र को सशक्त और समृद्ध बनाने के लिए निर्वाचन प्रणाली में सुधार का कार्य महत्वपूर्ण है, जिससे भारतीय लोकतंत्र की नींव को और भी मजबूत किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

पुस्तकें और प्रकाशन

1. "भारत का संविधान" – डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा संपादित भारतीय निर्वाचन प्रणाली के संवैधानिक आधार और चुनाव आयोग की भूमिका पर जानकारी।
2. "इलेक्शन लॉ, प्रैक्टिस एंड प्रोसीजर" – वीएस रामादास

भारतीय चुनाव कानून, प्रैक्टिस, और प्रक्रियाओं की गहन जानकारी, निर्वाचन आयोग के अधिकारों पर भी चर्चा।

3. "द इलेक्टोरल सिस्टम्स : ए कम्पेरेटिव इंट्रोडक्शन" – डेविड एम. फैरेल

विभिन्न चुनावी प्रणालियों, जैसे FPTP और PR का तुलनात्मक विश्लेषण। अनुपातिक प्रतिनिधित्व जैसे विकल्पों पर चर्चा।

4. "इंडियन पॉलिटिक्स एंड द इलेक्टोरल सिस्टम" – फाली एस. नरीमन

भारतीय चुनाव प्रणाली, इसके ऐतिहासिक विकास और इसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा।

5. "इलेक्टोरल रिफॉर्म्स इन इंडिया" – एल.सी. जैन

भारतीय चुनाव सुधारों की आवश्यकता, उनके प्रमुख मुद्दे, और संभावित सुधारों की चर्चा।

आधिकारिक दस्तावेज़ और रिपोर्ट्स

1. निर्वाचन आयोग की वार्षिक रिपोर्ट

भारतीय चुनाव प्रणाली पर निर्वाचन आयोग द्वारा वार्षिक रिपोर्ट्स और इनके सुझाव, जो चुनाव सुधार की दिशा में आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं।

2. "**राष्ट्रीय चुनाव सुधार समिति रिपोर्ट**" (National Election Reforms Committee Report)
भारतीय चुनाव प्रणाली के सुधार पर केंद्र सरकार की समिति द्वारा प्रस्तावित सुझाव और निष्कर्ष।
3. "**लॉ कमीशन ऑफ इंडिया रिपोर्ट**"
भारतीय विधि आयोग द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट्स, विशेषकर चुनावी सुधार और न्यायिक हस्तक्षेप पर

शोध पत्र और आलेख

1. "The Case for Proportional Representation in India" – **जर्नल ऑफ़ डेमोक्रेसी**
अनुपातिक प्रतिनिधित्व पर तुलनात्मक अध्ययन, भारत के लिए इसकी प्रासंगिकता और संभावित प्रभाव।
2. "Money Power and Muscle Power in Indian Elections" – **पॉलिटिकल स्टडीज**
भारतीय चुनावों में धन और बाहुबल के प्रभाव पर विश्लेषण और सुधार की आवश्यकता।
3. "Digital Transformation in Electoral Processes" – **आईईईई एक्सेस**
डिजिटलाइजेशन और तकनीकी सुधारों जैसे बायोमेट्रिक और ब्लॉकचेन वोटिंग के उपयोग पर।
4. "Electoral Malpractices in India and Need for Electoral Reforms" – **एशियन जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल साइंस**
भारतीय चुनावों में भ्रष्टाचार और सुधारों की जरूरत पर शोध।

वेबसाइट्स और ऑनलाइन स्रोत

1. **भारतीय निर्वाचन आयोग** (eci.gov.in)
भारतीय चुनावों के बारे में आधिकारिक जानकारी, निर्वाचन आयोग की गाइडलाइंस, रिपोर्ट्स, और डेटा।
2. PRS Legislative Research (prsindia.org)
चुनाव प्रणाली, वित्तीय पारदर्शिता, और अन्य राजनीतिक सुधारों पर नीति विश्लेषण।
3. Association for Democratic Reforms (adrindia.org)
चुनावी सुधार, प्रत्याशियों की पृष्ठभूमि और चुनावी पारदर्शिता पर रिपोर्ट्स और डेटा।
4. **लोकनीति - सीएसडीएस** (Lokniti - CSDS)
भारतीय चुनावों पर सर्वेक्षण डेटा और विश्लेषण